



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 532]

नई दिल्ली, बुहस्पतिवार, दिसम्बर 18, 1986/अग्रहायण 27, 1908

No. 532] NEW DELHI, THURSDAY, DECEMBER 18, 1986/AGRAHAYANA 27, 1908

इस भाग में भिन्न एवं संस्था वाली जाति है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Filing is given to this Part in order that it may be filed as a
a separate compilation

वित्त मंत्रालय
(मार्यादित कार्य विभाग)
(बैंकिंग प्रभाग)
नई दिल्ली, 18 दिसम्बर, 1986

प्रधिकारनाम

का. आ. 925 (अ):—केन्द्रीय सरकार, बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (7) के अनुसरण में हिन्दुस्तान कम्पियल बैंक लिमिटेड कानपुर के पंजाब नेशनल बैंक के साथ समामेलन की स्कीम के संबंध में, जो उक्त उपधारा के उपबंद्यों के अधीन केन्द्रीय सरकार द्वारा मंजूर की गयी है, 19 दिसम्बर, 1986 को विहित नारीख के स्पष्ट में विनियिष्ट करती है।

[सं. 17/2/86—बी. आ. -III (i)]

MINISTRY OF FINANCE
(Department of Economic Affairs)
(Banking Division)

New Delhi, the 18th December, 1986

NOTIFICATIONS

S.O. 925(E).—In pursuance of sub-section (7) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949), the Central Government hereby specifies the 19th December, 1986 as the prescribed date in

relation to the scheme for the amalgamation of the Hindustan Commercial Bank Limited, Kanpur with Punjab National Bank which has been sanctioned by the Central Government under the provisions of the said sub-section.

[No. 17/2/86-B.O.III(i)]

का. आ. 926(अ):—केन्द्रीय सरकार ने बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (1) के अधीन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किए गए छावेदन पर, उक्त धारा की उपधारा (2) के अधीन, हिन्दुस्तान कम्पियल बैंक लिमिटेड, कानपुर के सम्बन्ध में उक्त धारा 45 की उपधारा (2) के अधीन अधिस्थगन दर्शें किया है।

और भारतीय रिजर्व बैंक ने उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (4) द्वारा प्रवल शक्तियों का प्रयोग करते हुए, पंजाब नेशनल बैंक के साथ हिन्दुस्तान कम्पियल बैंक लिमिटेड, के समामेलन की स्कीम दीया गया है।

और रिजर्व बैंक ने उक्त धारा की उपधारा (6) के उपबंद्यों के अनुसार उक्त स्कीम का प्राप्त संवित बैंकों को भेजने के पश्चात् और उक्त स्कीम की वाक्त प्राप्त सुमावों और शाश्वेतों पर विवार करने के पश्चात् वह स्कीम उपल्लित की है और उसे मंजूरी के सिए केन्द्रीय सरकार को भेजा गया है।

४८ इस फैलीय सरकार ने उक्त प्रधिनियम की शारा 45 की उपधारा (7) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए इसमें आगे बढ़िया निवन्धनों और शर्तों के द्वारा इस स्थिय की मंजूरी दे दी है।

(1) हिन्दूस्तान कमरियल थेक लिपिटेड, कांसपुर इन्स्ट्राह थेक होगा और पंजाब नैशनल थेक इस्सरिती थेक होगा।

(2) ऐसी तारंग से जिसे केन्द्रीय सरकार उत्तर अधिनियम की आरा 45 की उपभारा (7) के द्वारा इस प्रयोजन के लिए विनियिष्ट करें। (जिसे इसमें इसके पश्चात् विहित तारीख कहा गया है) अन्तरक बैंक के सभी इधिकार, एकित्या, मांग, दावे, हित, प्राधिकार, विगेवांविकार, ताम, इस्तिया और जंगम और स्पष्टवार सम्पति, जिसके अन्तर्गत मूल्यांकन के सभी आपतनों या पद्धतों या कार्रारों द्वारा भारकित और उनमें अन्तर्विष्ट /बाटकों और अन्य अन्तराशियों द्वारा प्रमिवाओं के अधीन परिसर, जिसके अधीन वे प्राप्ति हैं, सभी कार्यालय, फर्नीचर, वियोजित उपस्कर, संयंत्र, यन्त्र और साधित्र, अहो, कागज-नाल लेखन सामग्री स्टाक, छत्य स्टाक और सामान, सभी स्टाक विनिधान, शेथर और प्रतिभूतियों, हाथ में और अधिकृत में प्राप्त सभी बुड़ियाँ, सभी हाथ की ओर लेखा की रोकड़ या बैंकों के पास निवेश लेखा (जिसके अन्तर्गत मांग पर या संक्षिप्त सूचना पर धन भी है), कुलियन, सभी वही क्रण, परक्षक, क्रण और प्रतिभूतियों के फायदे सहित अन्य क्रण या उसकी कोई प्रत्यामूर्ति अंतरक बैंक के कारबाह के संबंध में सभी अस्य, यदि कोई हों, संपत्ति इधिकार और सभी प्रत्यामूर्तियों के आलिन संबंधी फायदे, इस स्फीम के अन्य उपबंधों के अधीन रहते हुए अन्तरिती बैंक को घटारित हो जाएंगे और उसकी मूल्य और अस्तियों बन जाएंगे और विहित तारीख से ही अन्तरक बैंक के सभी दायित्व, कर्तव्य और फायदे, हमें इसके पश्चात् उपर्युक्त विस्तार तक और रोति में अन्तरिती बैंक के दायित्व, कर्तव्य और धार्यताएं होंगे और वह जाएंगे।

पूर्वगणी उत्तरवादी का व्यापकता पर प्रतिकूल प्रभाव ढाले बिना सभी संविधाएँ बिनेब, वंशवत्, करार, मुक्तातामें, विधिक प्रतिनिविषय को मन्त्रियों और किसी भी प्रहृति की अस्थि लिखते जो विहित तारीख के टीक पहले इस्तिवाशीन या प्रभावदोत हों, अस्तरीय बैंक के विस्तृया या उसके पक्ष में इसमें गते उत्तरवित विद्यार तक और रीति में प्रभाववाली होंगी और ऐसे ही कार्यविनियत की जा सकेंगी मानो भ्रष्टरक बैंक के स्थान पर इस्तरिया बैंक उनमें पक्षकार रहा हो, मानो वे प्रस्तरिया बैंक के पक्ष में जारी की गई हों ।

यदि विहित सारीख को अस्तरक बैंक द्वारा या उसके विशेष फोर्म वाल, अपील या किसी भी प्रवृत्ति की कोई धन्य विधिक कार्यवाही लंबित है तो उमका उपयोगन नहीं होगा, वह अब नहीं होगी या उस पर किसी भी रूप से प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा, किन्तु वह इस स्थिति के दृष्ट्य उपर्योग के द्वारा रहने हुए अस्तरित बैंक के द्वारा या उसके विशेष जारी रखी आ सकेगी और प्रवृत्ति की जा सकेगी।

यदि भारत से बाहर के किसी देश की विधि के अनुसार इस स्थीम पे उपचार उस देश में स्थित किसी ऐसी फ्रांसिन या वायिल्ट को जो इन्स्टरक बैंक के उपकरण के भाग हैं, इन्स्टरिटो बैंक को इन्स्टरिट या उसमें निहित रहने का प्रयत्न स्वयं नहीं रखते तो ऐसी फ्रांसिन या वायिल्ट के संबंध में इन्स्टरक बैंक का कार्यकलाप विहित तारीख से घट्स्टरिटी बैंक के तत्समय के मुख्य कार्यपालक अधिकारी में व्यस्त हो जाएगा और वह कार्यपालक अधिकारी ऐसी सभी जनित्यों का प्रयोग कर सकेगा तथा ऐसे सभी कार्य और बातें कर सकेगा, जो प्रमाणी रूप से इसके कार्यकलाप के परिसामाप्न के प्रयोजन के लिए इन्स्टरक बैंक द्वारा प्रयुक्त की जा सकती या की जा सकती है। मुख्य कार्यपालक अधिकारी ऐसा इन्स्टरण और निहित करने के प्रयोजन के लिए ऐसी सभी कार्यवाहियों करेगा, जो भारत के बाहर किसी ऐसे देश की विधियों द्वारा दीपेक्षित हों और उस संबंध में मुख्य कार्यपालक अधिकारी, या तो स्वयं या इसमें हारा इष्ट निमित्त प्राप्तिकृत किसी व्यक्ति के हारा इन्स्टरक बैंक को इस्टियो बहूत कर सकेगा या उसके वायिल्ट का निर्वहन करेगा और उसके शुद्ध आगमों का घट्स्टरिटी बैंक को इन्स्टरिट कर देगा।

3. प्रस्तावक वैक को बहिर्या इन्हीं को आएंगी और उनकी तुलना की जाएंगी और तुलन-पद प्रथमत 24 मई, 1986 को कारोबार की समाप्ति पर और तत्पश्चात् विकृत तारीख को तीक पूर्वतया तारीख को कारोबार की समाप्ति पर देखार किया जाएग सभा तुलन-पद छाटौं लेखाकार या छाटौं लेखाकार या छाटौं लेखाकारों की किसी ऐसी पर्याप्त दारा जो भारतीय रिमर्क वैक दारा इस प्रयोजन के सिए अनुमोदित या नामनिर्विष्ट हो संपरीक्षित और प्रमाणित कराए जाएंगे ।

पूर्वगामी पैरा के उपबंधों के अनुसार तैयार की गई अस्तरक बैंक के नुसन-पत्र की प्रत्येक प्रति अस्तरक बैंक हारा प्राप्त ही जाने के पश्चात् यातांसंभव शीघ्र कंपनी रजिस्ट्रार के पास फाइल की जाएगी और तत्पश्चात् अस्तरक बैंक से तुनन-पत्र या लाम और हानि लेखा तैयार करने या सदस्यों के समझ प्रस्तुत करने या उसकी प्रतियां कंपनी रजिस्ट्रार के पास फाइल करने की या तुनन-पत्र और लेखों पर विचार करने के प्रयोगन के लिए या किसी अन्य प्रयोगन के लिए या कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 159 के उपबंधों के अनुपालन करने के लिए याविष्णु साधारण अधिवेशन मुलाने की अपेक्षा नहीं की जाएगी और तत्पश्चात् अस्तरक बैंक के लिवेश कोड़े के तिर उस प्रतिनियम की धारा 283 की अपेक्षानुसार अधिवेशन करना आवश्यक नहीं होगा।

4. 1. ध्रुवितो बैंक, ध्रुतरक वैंक के परामर्श से नियन्त्रित
उपकरणों के ध्रुवार मन्त्ररक बैंक की समस्तियों और ध्रुवितों का मूल्यांकन
करेगा और दायित्वों को संभालना करेगा, ध्रुवीत :—

(क) सरकारी प्रतिष्ठानों से भिन्न विनियोगों का मूल्यांकन विद्युत तारीख की टोक पूर्ववर्ती तारीख को विद्यमान आवार दरों पर किया जाएगा।

(क) (i) सरकारी प्रतिभूतियों का मूल्यांकन गारंटीय रिकॉर्ड बैंक
द्वारा दैक कारो वित्तियम अधिनियम, 1949 की धारा 24
के प्रयोगजन के लिए जारी की गई अधिसूचना में अधिकारित
सिद्धांतों के भनुसार विविहत रीति में ठीक पूर्ववर्ती जारीख को
यथा विद्यमान रूप में हिंगा जारी।

(ii) केन्द्रीय सरकार की प्रतिभूतियों जैसे आकष्टर-प्रमाणनद, द्रेसरी बचत निधेप प्रमाण-नद, और केन्द्रीय सरकार की लघु वर्वत योजना के अधीन जारी की गई कोई अन्य प्रतिभूतियाँ या प्रमाण-नदों का मूल्यांकन उनके अधिक मूल्य के आधार पर या उक्त तारीख को सकद प्राप्त मूल्य के आधार पर, इन घोनों में से जो भी उच्चवर किया जाएगा।

(iii) जहा किसी सरकारी प्रतिभूति जैसे जमींदारी उभयलून बंध-पत्र या घम्य सामान्य प्रतिभूति जिसको बाबत यून किस्तों में देय है, का बाजार मूल्य अभिनिश्चित नहीं किया जा सकता है या किसी कारणवश यह भाना जाता है कि वह उसका उचित मूल्य प्रदर्शित नहीं करता है या वह घम्यता उचित नहीं है, तो प्रतिभूति का मूल्यकिण उत्तनी रकम पर किया जाएगा जो सरकार किए जाने वाले बकाया मूल्य और उसकी व्याज की किस्तों को उस कालावधि को जिसके द्वेरान ऐसी किस्तों देय है, सरकार द्वारा जारी को गई किसी प्रतिभूति के मूल्य को जिससे प्रतिभूति का संबंध है और जिसकी वैसी ही या लागड़ग वैसी ही परिवर्तन है तथा अन्य भुगतान यातों को व्याप में रखने हए, यक्षियमत समझा जाता है।

(ग) जहाँ किसी प्रतिभूति शेयर, डिवेन्चर, बंध-पत्र या भव्य विनिधान का बाजार मूल्य उसके अमामाल्य वातों से प्रभावित हो जाने के कारण युक्तियुक्त नहीं जाना जाता है, वहाँ विनिधान का मूल्यकांकन किसी युक्तियुक्त कालादधि के द्वारा उसके औसत बाजार भव्य के आधार पर किया जाएगा।

(घ) यहां किसी प्रतिभूति, शेयर या डिवेलपर या अन्य विनिधान का बाजार मूल्य अभिनिष्ठित नहीं किया जा सकता है, वहां जारी करने वाले समुद्घान की वित्तीय स्थिति, पूर्ववर्ती पाँच वर्षों के दौरान उसके द्वारा संबद्ध लाभों और अन्य सुरक्षित वार्षिकों को ध्यान में रखते हुए, केवल ऐसे मूल्य को, यदि कोई है, हिमाचल में लिया जाएगा जो युक्तियुक्त मूल्य माना जाएगा।

(ङ) वारों को तुष्टि के लिए आजित परिसरों और अन्य सभी जंगल संपत्तियों और किन्हीं आस्तियों का मूल्यांकन उनके बाजार मूल्य पर किया जाएगा।

(घ) फर्नीचर और फिल्मचर, स्टाक की लेखन सामग्री और अन्य आस्तियां, यदि कोई हों, का मूल्यांकन प्रति वही अधिकारित मूल्य के आधार पर या वसूली योग्य मूल्य के आधार पर, जो भी युक्तियुक्त समझा जाए, किया जाएगा।

(घ) अधिसे, जिनके अन्तर्गत अन्य की गई और निलिकाटे पर भूगत्तान की गई हुँडियां भी हैं, वही अट्ठों और विविध आस्तियों की संबोधा अन्तरिती बैंक द्वारा जो जाएगी और प्रतिभूतियां जिनके अन्तर्गत उसके आवरक के रूप में धारित प्रत्याभूतियां भी हैं, अन्तरिती बैंक द्वारा परेक्षित और सत्यापित की जाएंगी। तत्पश्चात् अधिसे जिनके अन्तर्गत उसके आवरक के रूप में वर्गीकृत किए जाएंगे, अन्यत् “बे अधिम जिन्हें प्रछढ़ा और आसानी से वसूली योग्य माना गया है” और “बे अधिम, जिन्हें आसानी से वसूली योग्य नहीं माना गया है और/या जिनकी वसूली दूषत या शंकास्पद है।

(ii) इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए वावित्यों के अन्तर्गत ऐसे सभी समानित दायित्व भी हैं, जिनके लिए अन्तरिती बैंक से विहित सारीख को या उसके पश्चात् अपने स्वयं के श्रोतों से उचित रूप से पूर्ति करने की आशा या अपेक्षा की जा सकेगी।

(iii) यहां किसी आस्ति का मूल्यांकन विहित तारीख को अवधारित नहीं किया जा सकता है, वहां यह भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन से, भागतः या पूर्णतः किसी परवात्वर्ती तारीख को वसूली योग्य आस्ति के रूप में माना जाएगा।

किसी आस्ति के मूल्यांकन और / या किसी अधिम के अर्भीकरण और/या किसी दायित्व के अवधारण की बाबत अन्तरिती बैंक और अन्तरक बैंक के बीच कोई प्रस्तुति है, तो वह मामला भारतीय रिजर्व बैंक को निर्देशित किया जाएगा जिसकी राय अन्तिम होगी, परन्तु जब तक ऐसी राय प्राप्त नहीं हो जाती तब तक अन्तरिती बैंक द्वारा मद्दों या उसके भाग का मूल्यांकन इस स्कीम के प्रयोजन के लिए अन्तिम रूप से अपनाया जाएगा।

ऐसा करना आवश्यक होने की एक में रिजर्व बैंक के लिए ऐसी तकनीकी राय प्राप्त करना आवश्यक होगा जो वह आस्ति की ऐसी किसी मद्द के मूल्यांकन या वावित की ऐसी किसी मद्द के अवधारण के संबंध में समृद्धि समझे, और ऐसी राय अधिप्राप्त करने का व्यय अन्तरक बैंक की आस्तियों में पूर्ण रूप से देय होगा।

पूर्वगामी उपर्योगों के अनुसार आस्तियों का मूल्यांकन और दायित्वों का अवधारण देनें बैंकों और उसके सदस्यों और लेनदारों पर आवश्यक होगा।

३. अन्तरक बैंक की संपत्ति और आस्तियों के अन्तरिती बैंक को अन्तरण होने के प्रतिक्रिया स्वरूप अन्तरिती बैंक इसे बाहर निर्विचित करना।

आप्तों में विहित विस्तार तक अन्तरक बैंक के वावित्यों का निर्वहन करना अर्थात्—

(क) विहित सारीख तक कमेचारीवृद्धि प्रतिभूति निःसीधों महित उसपर नोक्यूप्रत व्याज, यदि कोई है, के साथ उस बैंक के पास अन्तरक बैंक के किसी कर्मचारी द्वारा जमा की गई कोई धनराशि और विहित सारीख को सभी अन्य आद्य दायित्व, जिसके अन्तर्गत निक्षेप नहीं है, संवत्स किए जाएंगे या उनकी पूर्ण व्यवस्था की जाएगी।

स्पष्टीकरण

इस पैरा के प्रयोजन के लिए विहित सारीख तक निक्षेप पर देय व्याज सबूत निक्षेप का भाग माना जाएगा।

(घ) प्रत्येक बचत बैंक खाते या चालू खाते या किसी अन्य निःसीध की बाबत जिसके अन्तर्गत सावधि निःसीध, नकद प्रमाण-पत्र, मासिक निःसीध, मांग या संक्षिप्त सुधना पर देय निःसीध या अन्तरक बैंक के पास कोई अन्य निःसीध चाहे किसी भी भाव से जाने जाते हों और कोई अन्य खाते जो बाब्ड (क) के अन्तर्गत नहीं खाते हैं जिसके अन्तर्गत इस स्कीम के अधीन देय सीमा तक व्याज भी है, अन्तरिती बैंक विहित तारीख को संबंधित धारक/कों के नाम में एक तत्समान और वैसा ही आता खोलेगा जिसमें विहित तारीख को इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए पैरा (4) में निर्दिष्ट यथा मूल्यांकित आस्तियों में से प्रत्येक खाते के संबंध में उपलब्ध आनुपातिक शेयर मूल्य के रूप में जमा करेगा और इस प्रकार मूल्यांकित उक्त आस्तियों में से वे अधिम जो आसानी से वसूली योग्य नहीं माने गए हैं, या दूसंत हैं या जिनकी वसूली शंकास्पद है, कोई अन्य आस्तियां या आस्ति के भाग जो विहित तारीख को मूल्यांकित नहीं हैं और अन्य रकम जो उपर बाब्ड (क) में विहित संवाय या उपबन्धों के लिए अपेक्षित हैं, अपवर्जित किए जाएंगे और इस प्रकार मूल्यांकित उक्त आस्तियों में अन्तरक बैंक को जारी किए गए तारीख 24 मई, 1986 के अधिविषयन भाद्रेश के पैरा 2 के बाब्ड (क) (i) के आधार पर किए गए शंकायों की संकलित रकम जोड़ेगा।

परन्तु 24 मई, 1986 को कारबाह की समाप्ति को या उसके पश्चात् और विहित तारीख के पूर्व किसी निःसीध खाते से किए गए किसी संवाय की संवेदना इस उप पैरा के अधीन जमा की जाने वाली रकम के मध्ये की जाएंगी और तदानुभार जमा की जाने वाली रकम आनुपातिक शेयर होगी जिसमें ऐसे संवाय की रकम कम कर दी जाएगी।

परन्तु यह और कि जहां अन्तरिती बैंक को किसी विशेष खाते में की गई अविद्यियों के सही होने के बारे में कोई युक्तियुक्त संवेदन है तो वह रिजर्व बैंक के अनुमोदन से ऊपर बाब्ड (ग) के आधार पर उस लेखे में किए जाने वाले जमा धनराशि को प्रतिशारित कर सकेगा जब तक कि अन्तरिती बैंक ऐसे खाते में सही अविद्यि अभिनिष्ठित नहीं कर देता है।

स्पष्टीकरण

“आनुपातिक” पद से, जहां तक वह इस पैरा में द्याता है ऐसी संबंधित रकमों के अनुपात में अभिप्रेत है जो 24 मई, 1986 को कारबाह की समाप्ति पर बकाया देय है (विहित तारीख के दोहरे पूर्ववर्ती तारीख तक देय व्याज सहित) और जहां तक वह इस स्कीम में शान्त्यक द्याता है, तो ऐसी संबंधित रकमों के अनुपात में अभिप्रेत है जो संवाय या वितरण के मध्य बकाया देय है।

(ग) ऊपर खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट जमा धनराशि दिए जाने के पश्चात् अन्तरिती बैंक समावतः कम से कम विनिवृत्ति से किन्तु विहित तारीख से तीन मास तक निश्चय दीवा भोर प्रत्येक गारंटी नियम प्रधिनियम 1961 के प्रधीन स्थापित निषेप दीमा और प्रत्येक गारंटी नियम को (जिसमें इसके पश्चात् नियम कहा गया है) एक सूची देगा, जिसमें सभी प्रकार से उस प्रधिनियम की धारा 18 की प्रवेशाओं का अनुमालन किया गया है, और सत्पश्चात् जब भी उस प्रधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) में निर्दिष्ट रकम नियम से प्राप्त हो, अन्तरिती बैंक उस तारीख या तारीखों से जिसको रकम प्राप्त होती है, मात्र दिन के अन्दर उस खाते में देय धनराशि के विस्तार तक, उस प्रधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) के अनुसार ऊपर खण्ड (ख) में निर्दिष्ट प्रत्येक खातों में जमा करेगा।

परन्तु :—

- यदि खण्ड (ख) में निर्दिष्ट कोई खाता बन्द कर दिया गया या वह ऐसे समय पर जब उस खाते में जमा के लिए रकम नियम से प्राप्त होती है, परिवर्तन हो गया है तो उक्त रकम के हकदार व्यक्ति को संदाय प्रस्तरिती बैंक द्वारा नकद रूप में किया जायेगा।
- यदि खण्ड (ख) में निर्दिष्ट किसी रकम के हकदार व्यक्ति का पता नहीं लगाया जा सकता है या उसका आसानी से पता नहीं चल पा रहा है तो ऐसे व्यक्ति को देय रकम के लिए उपबन्ध स्वयं नियम की बिंदियों में किया जाएगा और उसका पृथक रूप से नेश्वा दिया जाएगा तथा प्रस्तरिती बैंक को किसी रकम का संदाय करना नियम के लिए आवश्यक नहीं होगा जब तक कि रकम का हकदार व्यक्ति मिल नहीं जाता है या उसका पता नहीं चल जाता है और नियम से प्रस्तरिती बैंक के भाष्यम से उस व्यक्ति की बाबत संदाय करने का विनिष्यय नहीं कर लिया है।
- विहित तारीख को प्रस्तरिती बैंक को समावत पूँजी की संपूर्ण रकम और धारकिती को छूटत और शंकास्पद खण्ड के लिए उपबन्ध के रूप में माना जाएगा और अन्तरक बैंक की अन्य धास्तियों में घटक्षयण और अन्तरक बैंक के सदस्यों के अधिकार प्रस्तरिती बैंक के संबंध में ऐसे होंगे जो नीचे पैरा (6) में उपलब्ध हैं।

6. निम्नलिखित की बाबत :—

- पूर्ववर्ती पैरा के खण्ड (ख) में विभिन्न प्रत्येक लेखों की बाबत उस खण्ड और खण्ड (ग) के प्राप्तार पर किसी लेखे, यदि कोई है, में जमा न किया गया अविशेष, और
- अन्तरक बैंक में प्रत्येक शेयर की बाबत जिसकी रकम को विहित तारीख से ठीक पूर्ण प्रत्येक शेयर धारक के द्वारा या उसकी ओर से शेयर पूँजी के मद्देस समावत रूप में माना गया था या नीचे (1) के अनुसरण में प्रस्तरिती बैंक द्वारा की गई मांग के मद्देस रकम संदर्भ की गई थी, संग्रहण लेखे के रूप में माना जाएगा और उसे प्रस्तरिती बैंक की बाहियों में उस प्रकार दर्ज किया जाएगा और नेश्वा के विश्व संदाय निम्नलिखित रीसि में किया जाएगा; अर्थात् :—

- (क) प्रस्तरिती बैंक प्रथम: ऐसे व्यक्ति से जो विहित तारीख को प्रस्तरिती बैंक में धारकित शेयर धारक के रूप में रजिस्ट्रीक्युल था (या जो इस प्रकार रजिस्ट्रीक्युल किए

जाने का हकदार होता) ऐसी तारीख या तारीखों से तीन मास के अन्दर जो विनिर्दिष्ट की जाए या जाए, ऐसे शेयर या शेयरों और बकाया मांगों, यदि कोई हो, की बाबत, उसके द्वारा असंदर्त रह रही अनाहृत रकम का संदाय करने की प्रवेशा कर सकेगा और तत्पश्चा त यदि यह आवश्यक पाया जाता है तो वह ऐसे प्रत्येक व्यक्ति में जो विहित तारीख को, अन्तरक बैंक के साधारण शेयर धारक के रूप में रजिस्ट्रीक्युल था (या जो इस प्रकार रजिस्ट्रीक्युल किए जाने का हकदार होता) ऐसी तारीख या तारीखों से जो विनिर्दिष्ट की जाए, तीन मास के अन्दर ऐसे शेयर या शेयरों या बकाया मांगों, यदि कोई हो, की बाबत उसके द्वारा असंदर्त रह रही अनाहृत रकम का संदाय करने की प्रवेशा कर सकेगा।

- (ख) अंतरक बैंक प्रत्येक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखने हुए, व्यक्तिकर्म की कालावधि के लिए यह: प्रतिशत वार्षिक व्याज विहित खण्ड (क) के अधीन देय रकम के संदाय की मांग और उसे प्रवर्तित करने के लिए सभी उपलब्ध कदम उठाएगा।

- (ii) प्रस्तरिती बैंक अप्रियमों, कदम या मिलिकादा किए गए अन्यान्य हुक्मों, बही झूणों और विविध अर्थों तथा अन्य आस्तियों की बाबत जो “ऐसे अप्रियमों के रूप में जो आसानी से बसूली योग्य नहीं है और या असूली के लिए बूबत या आकाशद” हैं, के रूप में वर्गीकृत किया गया है: या जो कठार पैरा 4 के आधार पर विहित तारीख के प्रथमांश पूर्णतः या आगम: बसूली योग्य है या हो सकते हैं के संबंध में भामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, संदाय की मांग और उसे प्रवर्तित करने के लिए सभी उपलब्ध कार्यवाही करेगा परन्तु यह और कि किसी अर्थ या आस्ति की रकम 50,000 रुपये से अधिक है, तो प्रस्तरिती बैंक भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन के बिना:

- (क) अर्थी या किसी अम्य व्यक्ति के साथ कोई समझौता या ठहराव नहीं करेगा या किसी ऐसे अर्थ या आस्ति को बद्दे खाते में मही बालेगा।

- (ख) उसे अंतरित किन्तु प्रतिभूतियों का या उसके द्वारा सी गई किसी आस्ति का विकल्प या अन्यथा व्ययन नहीं करेगा।

- (iii) इसके प्रतिरक्षा, प्रस्तरिती बैंक, बैंककारी विनियमन प्रधिनियम; 1949 की धारा 45 च के साथ और कंपनी प्रधिनियम, 1956 की धारा 543 के साथ भी पठित बैंककारी विनियमन प्रधिनियम, 1949 की धारा 45 च के प्रधीन अंतरिती बैंक के किसी संप्रवर्तक निवेशक, प्रबन्धक या अन्य अधिकारी के विश्व उच्च न्यायालय द्वारा तुकासानी के रूप में प्रधिनियमीत की गई रकम यदि कोई हो, की मांग करने और उनका संदाय करनाने के लिए प्रत्येक भामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सभी उपलब्ध कार्यवाहियों करेगा;

- (iv) प्रस्तरिती बैंक, उपर्युक्त खण्ड (i), (ii) और (iii) में उल्लिखित मरों के कालण अपने द्वारा की गई बसूलियों में से किसी समावित वायित की बाबत और रिजर्व बैंक के पूर्व अनुमोदन से किसी ऐसे वायित,

धारे वह सम किया हो या आवश्यक, की बाबत, जिसे उपर्युक्त पैरा (4) के नियंत्रणों के अनुसार नियंत्रित नहीं किया गया था और जो विहित लारोज़ को या उसके पश्चात उद्भूत हुआ है या जिसका पता चला है संघर्ष कर सकेगा या उस सीमा तक, जो पैरा 5 के अन्वेषन उसके लिए किया गया उपर्युक्त है, उपलब्ध कर सकेगा।

(v) अन्तर्रिती बैंक, उपर्युक्त खण्ड (i), (ii) और (iii) में उल्लिखित भवों के कारण अपने द्वारा की रुपैयां वसूलियों से से, उस प्रयोग के लिए उपगत श्रम का और भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन से ऐसे अन्दर व्ययों की, जो उचित समझा जाए, उसमें से कट्टीती करने और उपर्युक्त खण्ड (v) के नियंत्रणों के अनुसार उसमें से रकम विनियोजित करने के पश्चात या ऐसे अतिरिक्त, यदि कोई हो, में से, जो ऐसे व्ययों की सीमा अंतिम रूप से अनिवार्यता की जाने के पश्चात इस स्तरीय के प्रयोजनों के लिए यथा संगति समर्थित व्यापिताओं की बाबत उपब्रह्म में से उपलब्ध हो।

(क) निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी नियम अधिनियम, 1961 की धारा 18 की उपस्थान (2) के अन्वेषन अन्तर्रिती बैंक द्वारा नियम से प्राप्त रकम और नियम द्वारा उपर्युक्त रकम, यदि कोई हो, का संदाय करेगा, और

(ख) ऐसे नियोग-हार्डिंगों के मापने में, जिनकी बाबत अन्तर्रिती बैंक द्वारा कोई रकम नियम से प्राप्त नहीं की गई है, संग्रहण आते की बाबत शोध रकमों का और ऐसे निक्षेप-फतोंओं के मापने में, जिनकी बाबत अन्तर्रिती बैंक द्वारा कोई रकम नियम से प्राप्त की गई है या नियम द्वारा उपर्युक्त की गई है, नियम द्वारा किए गए या उपर्युक्त संघर्ष की विवित नियम को उन्हें आते से शोध रकमों को उपर्युक्त उपर्युक्त (क) के उपर्युक्तों के अनुसार पहले संदर्भ किए जाने के पश्चात उनके संग्रहण आते वै उन्हें शोध अनियम, यदि कोई हो, का संदाय करेगा।

परन्तु यह कि नियम को शोध रकम, यदि एसा करना आवश्यक हो तो, अन्तर्रिती बैंक की विवितों में उपर्युक्त की जाएगा। तबा निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी नियम संशोधन नियम, 1961 के नियम 22 खण्ड (ख) में निर्दिष्ट रीति से नियम का संदर्भ की जाएगा।

परन्तु यह और कि अन्तर्रिती बैंक, उपर्युक्त खण्ड (ख) में निर्दिष्ट संदर्भ उड़ान में करेगा—

(i) यदि पैरा (5) के खण्ड (ख) में उल्लिखित तस्वीरान या समरूप आते को बंद नहीं किया गया है या वह उस आते में प्रत्यय द्वारा भुगतान के लिए परियोजना नहीं हुआ है; और

(ii) यदि उक्त आते को बंद कर दिया गया है या वह उक्त भुगतान के लिए परियोजना नहीं है।

(vi) उपर्युक्त खण्ड (v) के उपर्युक्त (क) के नियंत्रणों के मनुसार नियम को शोध रकमों और उस खण्ड के उपर्युक्त (ख) के नियंत्रणों के अनुसार नियोग-हार्डिंगों के संघर्ष आते में शोध रकमों की ओरों आपस में समान होंगी, और प्रदि उनका संघर्ष पूर्ण हो जाएगा या सकता हो उनके समान अनुगत में कभी होगा।

(vii) इस पैरा के खण्ड (v) में निर्दिष्ट संघर्ष के लिए जाने या पूर्णतः उपर्युक्त किए जाने के मामलों, अन्तर्रिती बैंक, खण्ड (v) में निर्दिष्ट रकमों के उस अतिरिक्त, जो उसके पास उपलब्ध हो, भी से, अन्तर्रक बैंक के भूतपूर्व शेयर भारतीयों के खाते में शोध रकम, यदि कोई हो, हेतु ऐसी रीति से और उस सीमा तक, जो नीचे विनिर्दिष्ट है, आनुपातिक संघर्ष करेगा;

(क) प्रथमस: सब आते के लिए पूर्णतः संघर्ष किए जाने तक अन्तर्रक बैंक के भूतपूर्व अधिवास शेयरधारकों के खाते में शोध रकम, यदि कोई हो;

(ख) द्वितीयस: सब आते के लिए पूर्णतः संघर्ष किए जाने तक अन्तर्रक बैंक के भूतपूर्व सामान्य शेयरधारकों के खाते में शोध रकम, यदि कोई हो, और उसके पश्चात्,

(ग) तृतीयस: सब आते के लिए पूर्णतः संघर्ष किए जाने तक अन्तर्रक बैंक के भूतपूर्व आस्तगित शेयरधारकों के खाते में शोध रकम, यदि कोई हो;

(घ) उपर्युक्त उपर्युक्त (क), (ख) और (ग) में उल्लिखित मद रकम को पूर्णतः उपर्युक्त कोई रकम शोध है या नहीं हो तो उसे भारतीय रिजर्व बैंक को निर्दिष्ट किया जाएगा जिसका उत्तर विनियोजित अंतिम होगा।

परन्तु यह कि यदि कोई प्रश्न उठता है कि उपर्युक्त किसी उपर्युक्त में उल्लिखित आते के लिए कोई रकम शोध है या नहीं हो तो उसे भारतीय रिजर्व बैंक को निर्दिष्ट किया जाएगा जिसका उत्तर विनियोजित अंतिम होगा।

(viii) इस पैरा में निर्दिष्ट संघर्ष आते में शोध रकम के बारे में केवल अन्तर्रिती बैंक का वायित्व उस सीमा तक समझा जाएगा जो इस स्तरीय में लेपवित है।

(ix) विहित तारीख या ऐसी पूर्वतर घटवित से, जो ऐसी व्यापक सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक से परामर्श करने के पश्चात् इस प्रयोजन के लिए विनिर्दिष्ट करे, यारह वर्ष के व्यवसाय पर इस पैरा के खण्ड (ii) में निर्दिष्ट किसी ऐसी मद का जो उस तारीख तक वसूल नहीं की जा सकी हो, भूत्यांकन अन्तर्रिती बैंक द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक के पश्चात् से किया जाएगा और अन्तर्रिती बैंक, उसके मूल्यांकन को ध्यान में रखते हुए, अनुसारित कोई रकम, इस पैरा के खण्ड (iv) में निर्दिष्ट दायरियों को पूर्ति के लिए आवश्यक किसी ऐसी राशि की, जो उपर्युक्त खण्ड (v), (vi) और (vii) उपर्युक्त कम और रीति से उस तारीख तक बकायी जाने से रह गई हो, पहले उसमें से कट्टीती करके वितरित करेगा;

(ज) अन्तर्रिती बैंक, पूर्वतरी खण्ड (i), (ii) और (iii) में उल्लिखित भवों के कारण वसूल किए गए ऐसे धन को, जिनकी तुलन संघर्ष के लिए उसके द्वारा अपेक्षा किए जाने की समाप्तता नहीं है, अपने पास या किसी अन्य बैंक या बैंकों के पास आपस बाले निक्षेपों में, ऐसी रीति में और ऐसी अवधि के लिए, जो मापदण्ड के तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उपर्युक्त हो या जैसा भारतीय रिजर्व बैंक निर्देश दे, विनियोजित करेगा। प्रोद्भूत व्यापक को खण्ड (iv), (v), (vi), और (vii) में निर्दिष्ट व्यापित व्ययों की पूर्ति के लिए उनमें उपर्युक्त रीति से उपर्योगित किया जाएगा,

परन्तु किसी अभियवत्त या विवित संघर्ष में किसी प्रतिकूल वास के होने हुए भी, पैरा (5) के नियंत्रणों के अनुसार अन्तर्रिती बैंक के

पास थोड़े गए तरे की बाबत व्याज का संदाय किया जाएगा और उसे केवल उन या अगले उत्तरवर्ती पैराओं के अन्तराल पर्सों पर, जो अन्तरिती बैंक अनुमति करे, जमा किया जाएगा।

8. कोई भी निषेकर्ता या अन्तरक बैंक का अध्य लेनदार, उसके प्रति अन्तरक बैंक के किसी धायिक की बाबत अन्तरक बैंक या अन्तरिती बैंक से, इस स्कीम द्वारा विहित सौमा के लियाए, कोई मांग करने का हकदार नहीं होगा।

9. केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक या अन्तरिती या अन्तरक बैंक के खिलाफ किसी ऐसी बात के लिए कोई बाद या अन्य विधिक कार्यवाहियाँ नहीं होंगी, जो इस स्कीम के प्रनुदण में सदभावपूर्वक की गई है या कोई जाने के लिए आवश्यित है।

10. उत्तरवर्ती पैरा में विनियिष्ट अनुसूची, में विनियिष्ट कर्मचारियों से भिन्न अन्तरक बैंक के सभी कर्मचारी सेवा में बने रहेंगे और यह समझा जाएगा कि उन्हें अन्तरिती बैंक द्वारा उसी पारिश्रमिक और सेवा के उन्हीं निवंशनों और शर्तों पर नियुक्त किया गया है जो 24 मई 1986 को कारबाहर बंद होने के ठीक पहले ऐसे कर्मचारियों को लागू थीं।

परन्तु यह कि अन्तरक बैंक के ऐसे कर्मचारी, जिन्होंने अन्तरक बैंक से अन्तरिती बैंक को, उन तारीख के, जिनको यह स्कीम के द्वारा सरकार द्वारा मंजूर किया गया है, ठीक आगामी एक मास के अवधान के पूर्व किसी भी समय अन्तरिती बैंक के कर्मचारी न होने के अपने आशय के बारे में लिखित सूचना द्वारा सूचित किया है, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 के उपवर्द्धों के प्रधीन ऐसे प्रतिकर, यदि कोई हो, और ऐसे पेंशन, उदान अधिक्षम निधि और सेवानिवृत्ति फायदे के तंत्राय के लिए हकदार होंगे, जो 24 मई, 1986 को फारबार के बंद होने के ठीक पहले अन्तरक बैंक के प्राविकरण नियमों के अधीन सामान्य तीर पर अनुरोध हो।

परन्तु यह भी कि अन्तरक बैंक के ऐसे कर्मचारियों की बाबत, जिनके बारे में यह समझा जाता है कि उन्हें अन्तरिती बैंक के कर्मचारियों के रूप में नियुक्त किया गया है, अन्तरिती बैंक के बारे में भी यह समझा जाएगा कि उनमें अन्तरिती बैंक की सेवा में रहने के दौरान उनकी छंटनी की रूपा में इस द्वारा पर छंटनी प्रतिकर के संदाय का धायिक लिया है की उनका सेवा नियन्त्रण बनी रही है और अन्तरिती बैंक में उनके स्थानान्तरण से विच्छिन्न नहीं हुई है।

11. इस स्कीम से उपावद अनुसूची में विनियिष्ट व्यक्ति, विहित तारीख को अन्तरक बैंक के कर्मचारी नहीं रख जाएगे और तत्परता प्रवृत्त किसी विधि या किसी करार या लिंगिया में किसी बात के होने द्वारा भी, इस प्रकार विनियिष्ट व्यक्ति, केवल ऐसे पेंशन, उदान, अधिक्षम निधि और अन्य सेवानिवृत्ति फायदे के हकदार होंगे, जो 24 मई 1986 को कारबाहर के बंद होने के ठीक पहले अन्तरक बैंक के प्राविकरण नियमों के अधीन उन्हें सामान्य तीर पर अनुरोध हो।

परन्तु यह कि नियोजन की हानि के लिए प्रतिकर, यदि कोई हो, उहां तक उसका संबंध सेवा की किसी संविदा के अन्तर्वित माम से है, केवल वही होगा जो रिजर्व बैंक द्वारा अवधारित किया जाए (इस बाबत जिसका अवधारण चंतिम और आदद्वकर होगा)।

परन्तु यह भी कि इसमें की किसी बात से यह नहीं समझा जाएगा कि वह अन्तरिती बैंक को किसी ऐसे व्यक्ति के जिसका नाम इस स्कीम से उपावद अनुसूची में विनियिष्ट किया गया है, ऐसी हैसिया में और ऐसे निवंशनों और शर्तों पर, जो अन्तरिती बैंक उचित गमने, पुनर्नियोजन करने से निवारित करती है।

12. अन्तरिती बैंक, उस तारीख से, जिनको इस स्कीम को मंजूर किया जाता है, तीन वर्ष से अन्तरिक अवधि के अवधान पर, अन्तरक बैंक

के कर्मचारियों को वही पारिश्रमिक और सेवा के वही निवेदन और शर्त संदाय या मंजूर करेगा, जो अन्तरिती बैंक के तत्समान रैक या प्राप्तियि के मन्य कर्मचारियों को मंजूर होता है और अनुभव के समान या समतुल्य अन्तरक बैंक के उक्त कर्मचारियों के पास मंजूतक और अनुभव के अधीन रहते हुए, सागू होंगे।

परन्तु यह कि यदि कोई ऐसा या मतदेश उत्पन्न होता है कि उक्त कर्मचारियों में से किसी की मंजूर होता है या प्रत्युम्भ अन्तरिती बैंक के तत्समान रैक या प्राप्तियि के मन्य कर्मचारियों को मंजूर होता है और अनुभव के समान या समतुल्य है या वह अन्तरिती बैंक के बेतनमान में कर्मचारियों या वा बेतन नियत करने के लिए अनुमति जाने वाले सिद्धांतों की प्रक्रिया के संबंध में है, तो ऐसा या मतदेश को भारतीय रिजर्व बैंक को नियिष्ट किया जाएगा जिसका उक्त पर विविचय अनिम होगा।

13. यात्रियति, अन्तरक बैंक या अन्तरिती बैंक के कर्मचारियों के लिए गठित किसी भविष्य निधि और या उदान निधि में भ्याती या प्रशासन, विहित तारीख को या उसके पश्चात् यथासम्भव शीघ्र अन्तरिती बैंक के लिए गठित कर्मचारी भविष्य निधि और/या उदान निधि के भ्याती को, या अन्यथा, जैसा अन्तरिती बैंक निदेश दे, अन्तरक बैंक के कर्मचारियों के कारपैट के लिए भ्यात में घारित सत्र धन और विनियान अन्तरित कर देंगे।

परन्तु यह कि ऐसे पश्चात्तरी न्यासों, विनियानों के सूल्य में किसी कमी के लिए, या विहित तारीख के पूर्वे किसी कार्य, उत्तेजा, या अविकरण को बाबत जायी नहीं होंगे।

14. अन्तरिती बैंक, ऐसे पियरग्र और जानकारी भारतीय रिजर्व बैंक को भेजेगा, जो भारतीय रिजर्व बैंक इस स्कीम के कारपैट करने के संबंध में साथ-पनथ पर जोड़ा करे।

15. अन्तरिती बैंक, अन्तरक बैंक के कारपैटलाय का विवरण, ऐसे प्राप्त में और ऐसे कालिक अन्तरालों पर, जो भारतीय रिजर्व बैंक इस नियित विनियिष्ट करे, अन्तरक बैंक के बेवरवारकों को भेजेगा। ऐसे विवरणों का भेजा जाना तब तो कारबाहर हो जाएगा जब रिजर्व बैंक ऐसा निदेश दे।

16. किसी ऐसी सूचना या प्रथम संसूचना के बारे में, जिसकी अन्तरिती बैंक द्वारा दी जाने की घोषा की जारी है, उह वहा में यह समझा जाएगा कि उसे सध्यकू रा में दे दिया गया है, यदि अन्तरक बैंक की पुस्तकों में रिजिस्ट्रीहून पते पर, जब तक कि कोई नया पता अन्तरिती बैंक की पुस्तकों में रिजिस्ट्रीहून न हो, प्रियों को संबोधित किया गया है और उसे पूर्ण-संतर सम्बन्ध डाक से भेज दिया गया है, और ऐसों सूचना उत्ते डाक में डाले जाने के पश्चात् अडानों घटे के अवधान पर लायी तो गयी लम्ही जाएगी। इन्हें प्रतीकृत, किसी ऐसी सूचना या संसूचना को, जो सार्वजनिक हित की हो, एक या अधिक दैनिक समाचार पत्रों में, जिसका परिवालन ऐसे स्पार्टों पर हो जाए वैंक भारी कारबाहर का संघर्षहार कर रहा था, विभागित किया जाएगा।

17. यदि किसी स्कीम के किसी उपबन्ध का निवेदन करने समय कोई योग्य होती है तो मामले को भारतीय रिजर्व बैंक को नियिष्ट किया जाएगा और उसकी राय निवालन होगी और अन्तरिती बैंक और अन्तरक बैंक दोनों पर तथा इस प्रयोग बैंक के सभी सदस्यों, नियोक्ताओं और अन्य संबंधित क्षेत्रों पर भी किसी ऐसे अन्य व्यक्ति पर जिसका इन बैंकों में से किसी के संबंध में कोई अधिकार या दाविद्व है, आवद्वकर होगी।

18. यदि इस स्कीम के उपबन्धों को प्रभावी करने में कोई कठिनाई उत्पन्न होती है तो केन्द्रीय सरकार, अन्तरक और अन्तरिती बैंकों को या उनमें से किसी को, ऐसे नियेश, जो इस स्कीम से प्रत्येक न हो, जारी कर सकेगी, जो केन्द्रीय सरकार को भारतीय रिजर्व बैंक से परामर्श करने

परवात कठिनाई दूर करने के प्रयोजन के लिये आवश्यक या उपयुक्त प्रतीत हो।

19. श्री शिव कुमार तुलसियान और मन्दीर द्वारा दाता की गयी 1986 की 15721 और 1986 की 15085 की विशेष इजाजत वाचिकामों को रख करते हुए माननीय उच्चतम न्यायालय के सादेग के प्रकाश में, केवल भारत, यदि इस बात से संबुद्ध हो कि ऐसा करना जरूरी है, यह सर्वोन्नत विवादित कर बताये हैं, इष्टों परिवर्तन कर गहरी है या इसे बात के सक्षम है।

[व. 17/2/86 दो. III (ii)]
मन्देश्वर द्वा, संयुक्त सचिव

मन्दसूची

बैंकारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपाधारा (7) के मध्येन केवलीय सरकार द्वारा मंजूर की गई हिन्दुस्तान कमर्शियल बैंक लिमिटेड के समामेलन के लिए स्कीम से संलग्न और उसका भासक्षण अनुसूची।

कमर्शियल का नाम	अन्तरक बैंक में पद्धति
1. श्री बी. पी. निधन	महायक महाप्रबंधक, कानपुर
2. श्री जे. एल. गंगोत्री	सहायक महाप्रबंधक, कानपुर
3. श्री भार. श्री. शाह	महायक महाप्रबंधक, कानपुर
4. श्री भार. के. बाजपेई	सहायक महाप्रबंधक, कानपुर
5. श्री जे. के. सेठ ^(निलम्बनाधीन)	प्रबंधक शाखा कार्यालय, कोट भूतपूर्व प्रबंधक, शाखा कार्यालय भगरा
6. श्री सत्येश निधन ^(निलम्बनाधीन)	प्रधिकारी, शाखा कार्यालय हुल्दवाली
7. श्री एम. सी. प्रत्यापी ^(निलम्बनाधीन)	प्रबंधक, ज्यालापुर
8. श्री बी. एस. भरोड़ा ^(निलम्बनाधीन)	भार. एस. भो. चौधरी
9. श्री भार. एल. जैन ^(निलम्बनाधीन)	शाखा कार्यालय श्रीनगर
10. श्री भो. एम. श्रीयास्त्र ^(निलम्बनाधीन)	प्रबंधक, शाखा कार्यालय फैजाबाद
11. श्री के. श्री. हिंदारी ^(निलम्बनाधीन)	भूतपूर्व प्रबंधक, शाखा कार्यालय उन्नाव भूतपूर्व शाखा कार्यालय उन्नाव
12. श्री एस. जी. अग्रवाल ^(निलम्बनाधीन)	प्रधिकारी, शाखा कार्यालय कालपी रोड़, कानपुर
13. श्री भार. के. मिश्र	प्रबंधक, बाराबंकी
14. श्री भार. के. मेहरा ^(निलम्बनाधीन)	प्रधिकारी, सेसीय कार्यालय, भखनऊ
15. श्री पी. भार. राठी	प्रबंधक, शाखा कार्यालय भटिङ्गा
16. श्री के. भार. जैफ़ई	प्रबंधक, श्री एण्ड एम. हिपाटेंट प्रधान कार्यालय, कानपुर
17. श्री गुलजार सिंह संघु	प्रबंधक (वसुली) भटिङ्गा
18. श्री जमशीर सिंह	प्रधिकारी, शाखा कार्यालय, बरेली भूतपूर्व प्रधिकारी, भगलपुर ज़िला भाजार, कलकत्ता
19. श्री ए. के. दास	प्रधिकारी, शाखा कार्यालय, हैदराबाद
20. श्री ए. श्री. निधोन	

21. श्री ए. के. सहगल

22. श्री एस. के. सेठी

23. श्री भार. एत. मेहरोता

24. श्री प्रबुद्ध राय

25. श्री एस. के. चक्रवर्ती

26. श्री प्रदीप सहाय

27. श्री भार. के. अग्रवाल

28. श्री डो. पी. चौधरी

प्रधिकारी, थेवीय कार्यालय, कानपुर
भूतपूर्व प्रबंधक, शाखा कार्यालय,
मेस्टन रोड, कानपुर

प्रबंधक, प्रतराष्ट्रीय बँडिंग, केम्ब्रिय
कार्यालय, कानपुर

भूतपूर्व प्रबंधक राजिंर नगर,
सखनऊ ज़िला प्रधिकारी शाखा कार्या-
लय हनुमांज, सखनऊ

प्रधिकारी एम. एस. रोड, कलकत्ता

प्रबंधक, शाखा कार्यालय माणिक-
दोला, कलकत्ता

प्रबंधक, थेवीय कार्यालय, कानपुर

प्रबंधक, शाखा कार्यालय, जम्मू

प्रबंधक, शाखा कार्यालय बड़ा
बौजार, कलकत्ता

S.O. 926(E).—Whereas on an application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) the Central Government has made, under sub-section (2) of the said section 45 an order of moratorium in respect of the Hindustan Commercial Bank Ltd., Kanpur, under sub-section (2) of the said section.

And whereas the Reserve Bank of India in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of section 45 of the said Act has prepared a scheme for the amalgamation of the Hindustan Commercial Bank Ltd., Kanpur with the Punjab National Bank.

And whereas the Reserve Bank of India after having sent the said scheme in draft to the banks concerned in accordance with the provisions of sub-section (6) of the said section and after having considered the suggestions and objections received in regard to the said scheme had modified that scheme and forwarded it to the Central Government for sanction.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (7) of section 45 of the said Act, the Central Government hereby sanctions the scheme on and subject to the terms and conditions hereinabove mentioned.

(1) The Hindustan Commercial Bank Ltd, Kanpur shall be transferor bank and the Punjab National Bank shall be the transferee bank.

(2) As from the date which the Central Government may specify for this purpose under sub-section (7) of sec. 45 of the said Act thereafter referred to as the prescribed date) all rights, powers, claims demands, interests, authorities, privileges, benefits, assets and properties of the transferor bank, movable and immovable, including premises subject to all incidents of tenure and to the rents and other sums of money and covenants reserved by or contained in the leases or agreements under which they are held, all office furniture, loose equipment, plant, apparatus and appliances, books, papers, stocks of stationery, other stock and stores, all investments in stocks, shares and securities, all bills receivable in hand and in transit, all cash in hand and on current or deposit account (including money at call or short notice) with

banks; bultor, all book debts, mortgage debts and other debts with the benefit of securities, or any guarantee therefor, all other, if any, proeprity rights and assets benefit of all guarantees in connection with the business of the transferor bank shall, subject to the other provisions of this scheme, stand transferred to, and become the properties and assets of, the transferee bank; and as from the prescribed date all the liabilities, duties and obligations of the transferor bank shall te and shall become the liabilities, duties and obligations of the transferee bank to the extent and in the manner provided hereinafter.

Without prejudice to the generality of the foregoing provisions, all contracts, deeds, bonds, agreements, powers of attorney grants of legal representation and other instruments of whatever nature subsisting or having effect immediately before the prescribed date shall be effective to the extent and in the manner hereinafter provided against or in favour of the transferee bank and may be acted upon as if instead of the transferor bank the transferee bank had been a party thereto or as if they had been issued in favour of the transferee bank.

If on the prescribed date any suit, appeal or other legal proceedings of whatever nature by or against the transferor bank is pending, the same shall not abate, or be discontinued or be in any way prejudicially affected, but shall, subject to the other provisions of this scheme, be prosecuted and enforced by or against the transferee bank.

If according to the laws of any country outside India the provisions of this scheme, by themselves, are not effective to transfer or vest any asset or liability situated in that country which forms part of the undertaking of the transferor bank to or in the transferee bank, the affairs of the transferor bank in relation to such assets or liability shall, on the prescribed date, stand entrusted to the Chief Executive officer for the time being of the transfece bank and the chief executive officer may exercise all powers and do all such acts and things as would have been exercised or done by the transferor bank for the purpose of effectively winding up its affairs. The chief executive officer shall take all such steps as may be required by the laws of any such country outside India for the purpose of effecting such transfer or vesting and in connection therewith the chief executive officer may, either himself or through any person authorised by him in this behalf, realise any assets or discharge any liability of the transferor bank and transfer the net proceeds thereof to the transferee bank.

(3) The books of the transferor bank shall be closed and balanced and balance sheets prepared in the first instance as at the close of business on the 24th May, 1986 and thereafter as at the close of business on the date immediately preceding the prescribed date and the balance sheets shall be got audited and certified by a chartered accountant; or a firm of chartered accountants approved or nominated by the Reserve Bank of India for the purpose.

A copy each of the balance sheets of the transferor bank prepared in accordance with the provisions of

the foregoing paragraph, shall be filed by the transferor bank with the Registrar of Companies as soon as possible after it has been received and thereafter the transferor bank shall not be required to prepare balance sheets or profit and loss accounts, or to lay the same before its mebers or file copies thereof with the Registrar of Companies or to hold any annual general meeting for the purpose of considering the balance sheet and accounts or for any other purpose or to comply with the provisions of section 159 of the Companies Act, 1956, and it shall not thereafter be necessary for the Board of Directors of the transferor bank to meet as required by section 285 of that Act.

(4) I. The transferee bank shall, in consultation with the transferor bank, value the property and assets and reckon the liabilities of the transferor bank in accordance with the following provisions, namely: —

(a) Investments other than Government Securities shall be valued at the market rates prevailing on the day immediately preceding the prescribed date

(b) (i) Government securities shall be valued as on the day immediately preceding the prescribed date in accordance with the principles laid down in the notification issued by Reserve Bank of India for the purpose of section 24 of the Banking Regulation Act, 1949.

(ii) The securities of the Central Government such as Post Office Certificate, Treasury Savings Deposit Certificates and any other securities or certificates issued under the small savings scheme of the Central Government shall be valued at their face value or the encashable value as on the said date, whichever is higher.

(iii) Where the market value of any Government Security such as the Zamindari Abolition Bonds or other similar security in respect of which the principal is payable in instalments is not ascertainable or is, for any reason, not considered as reflecting the fair value thereof or as otherwise appropriate, the security shall be valued at such an amount as is considered reasonable having regard to the instalments of principal and interest remaining to be paid, the period during which such instalments are payable, the yield of any security issued by the Government to which the security pertains and having the same or approximately the same maturity, and other relevant factors.

(c) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not considered reasonable by reason of its having been affected by abnormal factors, the investment may be valued on the basis of its average market value over any reasonable period.

(d) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not ascertainable only such value, if any, shall be taken into account as is considered reasonable, having regard to the financial position of the issuing concern, the dividends paid by it during the preceding five years and other relevant factors.

(e) Premises and all other immovable properties and any assets acquired in satisfaction of claims shall be valued at their market value.

(f) Furniture and fixtures, stationery in stock and other assets, if any, shall be valued at the written down value as per books or the realisable value as may be considered reasonable.

(g) Advances including bills purchased and discounted, books debts and sundry assets, will be scrutinised by the transferee bank and the securities, including guarantees held as cover therefor examined and verified by the transferee bank. Thereafter the advances, including portions thereof, will be classified into two categories, namely, "Advances considered good and readily realisable" and "Advances considered not readily realisable and/or bad or doubtful of recovery".

II. Liabilities for purposes of this scheme shall include all contingent liabilities which the transferee bank may reasonably be expected or required to meet out of its own resources on or after the prescribed date.

III. Where the valuation of any asset cannot be determined on the prescribed date, it may, with the approval of the Reserve Bank of India be treated partly or wholly as an asset realisable at a later date.

In the event of any disagreement between the transferee bank and the transferor bank as regards the valuation of any asset and/or the classification of any advance and/or the determination of any liability, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India whose opinion shall be final, provided that until such an opinion is received, the valuation of the item or portion thereof by the transferee bank shall provisionally be adopted for the purpose of this scheme.

It shall be competent for the Reserve Bank of India in the event of its becoming necessary to do so, to obtain such technical advice as it may consider to be appropriate in connection with the valuation of any such item of asset or determination of any such item of liability, and the cost of obtaining such advice shall be payable in full out of the assets of the transferor bank.

The valuation of the assets and the determination of the liabilities in accordance with the foregoing provisions shall be binding on both the banks and the members and creditors thereof.

(5) In consideration of the transfer of the property and the assets of the transferor bank to the transferee bank, the transferee bank shall discharge the liabilities of the transferor bank to the extent mentioned in this and the following clauses, namely,

(a) Any sums deposited by any employee of the transferor bank with that bank as staff security deposits together with interest, if any accrued thereon upto the prescribed date and all other outside liabilities as on the prescribed date excluding deposits shall be paid or provided for in full.

EXPLANATION

For the purpose of this paragraph, interest payable on a deposit upto the prescribed date shall be regarded as part of the concerned deposit.

(b) In respect of every savings bank account or current account or any other deposit including a fixed deposit, cash certificate, monthly deposit, deposit payable at call or short notice or any other deposit by whatever name called with the transferor bank and every other account not covered by clause (a), including interest to the extent payable under this scheme, the transferee bank shall open with itself on the prescribed date a corresponding and similar account in the name of the respective holder(s) thereof crediting thereto the prorata share available in respect of each of the accounts out of the assets referred to in paragraph (4) as valued for the purposes of this scheme on the prescribed date, after excluding from the said assets as so valued the advances considered not readily realisable or bad or doubtful of recovery, any asset or portion of an asset not valued on the prescribed date and any amount needed for the payments or provisions mentioned at clause (a) above and after adding to the said assets as so valued the aggregate amount of the payments made in terms of clause (a)(i) of paragraph 2 of the moratorium order dated the 24th May, 1986 issued to the transferor bank.

Provided that any payment made from a deposit account on, or after the close of business on 24th May, 1986 and before the prescribed date, shall be reckoned towards the amount to be credited under this sub-paragraph and, accordingly the amount to be credited shall be the pro rata share less the amount of such payment.

Provided further that where the transferee bank entertains a reasonable doubt about the correctness of the entries made in any particular account it may with the approval of the Reserve Bank withheld the credit to be made in that account in terms of clause (b) above till the transferee bank is able to ascertain the correct balance in such account.

EXPLANATION

The term 'Prorata' shall, insofar as it occurs in this paragraph, mean in proportion to the respective amounts remaining due as at the close of business on the 24th May, 1986 together with the interest payable up to the date immediately preceding the prescribed date and shall, insofar as it occurs elsewhere in this scheme, mean 'in proportion to the respective amounts remaining due at the time of the payment or distribution'.

(c) After the credits referred to in clause (b) above have been afforded, the transferee bank shall, with the least possible delay but in any case not later than three months from the prescribed date, furnish to the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation established under the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961 (hereinafter referred to as the Corporation) a list complying in all respects with the requirements of sub-section (1) of section 18 of that Act and thereafter

whenever amounts referred to in sub-section (2) of section 18 of that Act are received from the Corporation, the transferee bank shall credit each of the accounts referred to in clause (b) above, within seven days from the date or dates on which the amounts are received, to the extent of the sums due to that account in accordance with sub-section (2) of section 18 of that Act :

Provided that—

- (i) If any account referred to in clause (b) has been closed or has matured for payment at the time when any amount for credit to that account is received from the corporation, the payment to the person entitled to the said amount shall be made by the transferee bank in cash;
- (ii) in case the person entitled to any amount referred to in clause (b) cannot be found or is not readily traceable, provision for the amount due to such person shall be made and accounted for separately on the books of the Corporation itself and it shall not be necessary for the Corporation to pay the amounts to the transferee bank unless the person entitled to the amount is found or traced and the Corporation has decided to make the payment in respect of that person through the transferee bank.

(d) On the prescribed date, the entire amount of the paid-up capital and reserves of the transferor bank shall be treated as provisions for bad and doubtful debts and depreciation in other assets of the transferor bank and the rights of the members of the transferor bank shall, in relation to the transferor bank, be as provided for in paragraph (6) below :—

(6) In respect of

- (A) every account mentioned in clause (b) of the preceding paragraph, the balance in the account, if any, remaining uncredited in terms of that clause and clause (c) and
- (B) every share in the transferor bank, the amount of which was treated as paid-up towards share capital by or on behalf of each shareholder immediately before the prescribed date and/or the amount paid on account of the calls made by the transferee bank in pursuance of clause (i) below,

shall be treated as a collection account and shall be entered as such in the books of the transferee bank and payments against the account shall be made in the following manner, namely; (i) (a) the transferee bank shall, in the first instance, call upon every person who on the prescribed date was registered as the holder of a deferred share in the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares and the calls in arrears, if any and thereafter if it is found to be so necessary, every person who was, as on the

prescribed date, registered as the holder of an ordinary share of the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares or the calls in arrears, if any ;

(6) the transferee bank shall take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts due under clause (a) together with interest at six per cent per annum for the period of the default.

(ii) the transferee bank shall in respect of the advances, bills purchased and discounted, book debts and sundry debts and other assets, which are classified as "Advances considered not readily realisable and/or bad or doubtful of recovery" or which are or may be realisable wholly or partly after the prescribed date in terms of paragraph (4) above, take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce payment, provided, however, that if the amount of a debt or asset exceeds Rs. 50,000, the transferee bank shall not except with the approval of the Reserve Bank of India,

(a) enter into a compromise or arrangement with the debtor or any other person or write off any such debt or asset.

(b) sell or otherwise dispose of any securities transferred to it or any asset taken over by it.

(iii) the transferee bank shall in addition take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts, if any, awarded as damages by the High Court against any promoter, director, manager or other officer of the transferor bank under section 45L of the Banking Regulation Act, 1949, read with section 45H thereof and also with section 543 of the Companies Act, 1956;

(iv) the transferee bank may, out of the realisations affected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, make payment or provision in respect of any contingent liability to the extent that the provision made therefor under paragraph (5) (a) proves to be inadequate, as also with the prior approval of the Reserve Bank, in respect of any liability whether contingent or absolute which was not assessed in terms of paragraph (4) above and has arisen or been discovered on or after the prescribed date :

(v) The transferee bank shall out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above after deducting therefrom the expenditure incurred for the purpose and, with the approval of the Reserve Bank of India, such other expenses as may be considered reasonable and the amount appropriated therefrom in terms of clause (iv) above, or out of the balance, if any, which may be available from out of the provision in respect of contingent liabilities as reckoned for the purposes of this scheme after the extent of such liabilities has finally been ascertained;

- (a) pay to the Corporation the amount received by the transferee bank from the Corporation under sub-section (2) of section 18 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961, and the amount, if any, provided for by the Corporation, and
- (b) pay, in the case of depositors in respect of whom no amounts have been received by the transferee bank from the Corporation, the amounts due in respect of the collection accounts, and in the case of depositors in respect of whom any amounts have been received by the transferee bank from the Corporation or have been provided for the Corporation the balance if any due to them in their collection accounts after the amounts due from the said accounts to the Corporation in respect of the payment made or provided for by the Corporation have first been paid in accordance with the provisions of sub-clause (a) above;

Provided that the amount due to the Corporation shall, if it becomes necessary so to do, be provided for in the books of the transferee bank and be paid to the Corporation in the manner specified in clause (b) of regulation 22 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation General Regulations, 1961

Provided further that the transferee bank shall make the payments referred to in clause (b) above,

(i) if the corresponding or similar account mentioned in clause (b) of paragraph (5) has not been closed or has not matured for payment, by credit to that account, and

(ii) if the said account has been closed or has matured for payment; in cash;

(vi) The amounts due to the Corporation in terms of sub-clause (a) of clause (v) above and the amounts due to the collection accounts of the depositors in terms of sub-clause (b) of that clause shall rank equally among themselves, and if they cannot be paid in full shall abate in equal proportions;

(vii) After the payments referred to in clause (v) of this paragraph have been made or provided for in full, the transferee bank shall out of the balance of the amounts referred to in clause (v) which may be available to it, make payments pro rata towards the amounts, if any, due to the accounts of the former shareholders of the transferor bank in the manner and to the extent specified below :

(a) in the first place, the amounts, if any, due to the accounts of the former preference shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;

(b) in the second place, the amounts, if any, due to the accounts of the former ordinary shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made; and thereafter;

- (c) in the third place, the amounts, if any, due to the accounts of the former deferred shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;
- (d) after all the amounts mentioned in sub-clauses (a), (b) and (c) above have been paid in full, the surplus, if any, remaining in the hands of the transferee bank shall be distributed pro rata among the former ordinary shareholders of the transferor bank.

Provided that if any question arises whether any amounts are due against an account mentioned in any of the above sub-clauses, it shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(viii) The amounts due to the collection accounts referred to in this paragraph shall be deemed to be liability of the transferee bank only to the extent provided for in this scheme;

(ix) On the expiry of twelve years from the prescribed date or such earlier period as the Central Government after consulting the Reserve Bank of India may specify for this purpose, any item referred to in clause (ii) of this paragraph which may not have been realised by that date shall be valued by the transferee bank in consultation with the Reserve Bank of India and the transferee bank shall distribute any amount or amounts determined in the light of that valuation after deducting therefrom first any sum necessary for meeting the liabilities referred to in clause (iv) of this paragraph which may remain unsatisfied as on that in the order and the manner provided in clauses (v), (vi) and (vii) above.

(x) The transferee bank shall invest such moneys realised on account of items mentioned in the preceding clauses (i), (ii) and (iii) as are not likely to be required by it for immediate payment, in interest bearing deposits with itself or with any other bank or banks, in such manner and for such periods as may be appropriate having regard to the facts and circumstances of the case or as the Reserve Bank of India may direct. The interest accrued shall be applied for meeting the liabilities referred to in clauses (iv), (v), (vi) and (vii) in the manner indicated therein.

(7) Notwithstanding anything to the contrary contained in any contract, express or implied, interest shall be paid in respect of the new accounts opened with the transferee bank in terms of paragraph (5) and credited in accordance with the provisions of that or the next succeeding paragraphs only at such rates as the transferee bank may allow.

(8) No depositor or other creditor of the transferor bank shall be entitled to make any demand against the transferor bank or the transferee bank in respect of any liability of the transferor bank to him except to the extent prescribed by this scheme.

(9) No suit or other legal proceedings shall lie against the Central Government, the Reserve Bank of India or the transferee bank or the transferor bank for anything which is in good faith done or intended to be done in pursuance of this scheme.

(10) All the employees of the transferor bank other than those specified in the schedule referred to in the succeeding paragraph shall continue in service and be deemed to have been appointed by the transferee bank at the same remuneration and on the same terms and conditions of service as were applicable to such employees immediately before the close of business on 24th May 1986.

Provided that the employees of the transferor bank who have, by notice in writing given to the transferor or the transferee bank at any time before the expiry of one month next following the date on which this scheme has been sanctioned by the Central Government, intimated their intention of not becoming employees of the transferee bank, shall be entitled to the payment of such compensation, if any, under the provisions of the Industrial Disputes Act, 1947, and such pension, gratuity, provident fund and other retirement benefits as may be ordinarily admissible under the rules of authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 24th May 1986.

Provided further that the transferee bank shall in respect of the employees of the transferor bank who are deemed to have been appointed as employees of the transferee bank be deemed also to have taken over the liability for the payment of retrenchment compensation in the event of their being retrenched while in the service of the transferee bank on the basis that their service has been continuous and has not been interrupted by their transfer to the transferee bank.

(11) The persons specified in the schedule annexed to this scheme shall on the prescribed date cease to be the employee of the transferor bank and notwithstanding anything contained in any law for the time being in force or any agreement or any contract, the person so specified shall be entitled to and only to such pension, gratuity, provident fund and other retirement benefits as may be ordinarily admissible to them under the rules or authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 24th May 1986.

Provided that the compensation, if any, for the loss of employment, so far as it relates to the unexpired portion of any contract of service, shall be such and only such as may be determined by the Reserve Bank (whose determination in this respect shall be final and binding).

Provided further that nothing herein shall be deemed to prevent the transferee bank from re-employing any person whose name has been specified in the schedule annexed to this scheme in such capacity and on such terms and conditions as the transferee bank may deem fit.

(12) The transferee bank shall, on the expiry of a period not longer than three years from the date on which this scheme is sanctioned, pay or grant to the employees of the transferor bank the same remuneration and the same terms and conditions of service as are applicable to the employees of corresponding rank or status of the transferee bank subject to the qualifications and experience of the said employees of the transferor bank being the same as or equivalent to those of such other employees of the transferee bank.

Provided that if any doubt or difference arises as to whether the qualifications or experience of any of the said employees are the same as or equivalent to the qualifications and experience of the other employees of corresponding rank or status of the transferee bank or as to the procedure on principles to be adopted for the fixation of the pay of the employee in the scales of pay of the transferee bank, the doubt or difference shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(13) The trustees or administrators of any provident fund and/or gratuity fund constituted or the employees of the transferor bank or as the case may be, the transferor bank shall on or as soon as possible after the prescribed date transfer to the trustee of the employees provident fund and/or gratuity fund constituted for the transferee bank, or otherwise as the transferee bank may direct, all the monies and investments held in trust for the benefit of the employees of the transferor bank.

Provided that such latter trustees shall not be liable for any deficiency in the value of investments or in respect of any act, neglect, or default done before the prescribed date.

(14) The transferee bank shall submit to the Reserve Bank of India such statements and information as may be required by the Reserve Bank of India from time to time regarding the implementation of this scheme.

(15) The transferee bank shall furnish to the shareholders of the transferor bank a statement of affairs of the transferor bank in such form and at such periodical intervals as the Reserve Bank of India may specify in this behalf. The sending of such statements shall be discontinued when so directed by the Reserve Bank.

(16) Any notice or other communication required to be given by the transferee bank shall be considered to be duly given if addressed and sent by pre-paid ordinary post to the addressee at the address registered in the books of the transferor bank, until a new address is registered in the books of the transferee bank and such notice shall be deemed to be served on expiry of forty-eight hours after it has been posted. Any notice or communication which is of general interest shall be advertised in addition in one or more daily newspapers which may be in circulation at the place where the transferor bank was transacting its business.

(17) If any doubt arises in interpreting any of the provisions of this scheme, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India and its opinion shall be conclusive and binding on both the transferee bank and transferor bank, and also on all the members, depositors and other creditors and employees of each of these banks and on any other person having any right or liability in relation to any of these banks.

(18) If any difficulty arises in giving effect to the provisions of this scheme, the Central Government may issue to the transferor and the transferee banks or either of them such directions not inconsistent with

this scheme as may appear to the Central Government, after consulting the Reserve Bank of India, to be necessary or appropriate for the purpose of removing the difficulty.

(19) The Central Government may if it is satisfied that it is necessary so to do, modify, vary or withdraw this Scheme in the light of the observations made by the Hon'ble Supreme Court on 18th December, 1986 while dismissing the the Special Leave Petitions Nos. 15721 of 1986 and 15085 of 1986 filed by Shri Shiv Kumar Tulsian and others.

[No. 17/2/86-B.O. III(ii)]
MANTRISHWAR JHA, Jt. Secy.

SCHEDULE

Schedule attached to and forming part of the scheme for the amalgamation of the Hindustan Commercial Bank Ltd., as sanctioned by the Central Government under Sub-section (7) of Section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949)

Sl. No.	Name of the employee	Designation in the transferor bank
1.	Shri B.P. Singhal	Assistant General Manager, Kanpur
2.	Shri J.L. Gambhir	Assistant General Manager, Kanpur
3.	Shri R.D. Shah	Assistant General Manager, Kanpur
4.	Shri R.K. Bajpai	Assistant General Manager, Kanpur
5.	Shri J.K. Seth (under suspension)	Manager, B.O. Kota, formerly Manager, B.O. Agra
6.	Shri Satbir Singh (under suspension)	Officer, B.O., Haldwani
7.	Shri M.C. Awasthi (under suspension)	Manger, Jawalapur
8.	Shri B.S. Arora (under suspenion)	R.M.O. Chandigarh
9.	Shri R.L. Jain (under suspension)	B.O. Srinagar

Sl. No.	Name of the employee	Designation in the transferor bank
10.	Shri O.N. Srivastava (under suspension)	Manager, B.O. Faizabad
11.	Shri K.D. Tewari (under suspension)	Formerly Manger B.O. Ugo now at B.O. Unnao
12.	Shri S.G. Agarwal (under suspension)	Officer B.O. Kalpi Road, Kanpur
13.	Shri R. K. Mishra	Manager, Barabanki
14.	Shri R.K. Mehra	Officer Regional Office, Lucknow
15.	Shri P.R. Rath	Manager, B.O. Bhatinda
16.	Shri K.I. Shepherd	Manager, O & M Deptt. H.O. Kanpur
17.	Shri Gulzar Singh Sandhu	Manager (Recovery) Bhatinda
18.	Shri Jasbir Singh	Officer B.O. Bareilly
19.	Shri A.K. Das	Officer, Bhagalpur, formerly at Bara Bazar Calcutta
20.	Shri A.D. Leon	Officer, B.O. Hyderabad
21.	Shri A.K. Sagal	Officer, Regional Office, Kanpur, formerly Manager B.O. Mehton Road, Kanpur
22.	S.K. Singh	Manager, International Banking, C.O. Kanpur.
23.	Shri I.N. Mehrotra	Formerly Manger Rajinder Nagar, Lucknow now Officer at B.O. Hazrat Ganj, Lucknow
24.	Shri Prabudha Roy	Officer, N.S. Road, Calcutta
25.	Shri S.K. Chakravarty	Manager, B.O. Maniktolla Calcutta
26.	Shri Pradip Sahai	Manager, Regional Office, Kanpur
27.	Shri R.K. Agarwal	Manager, B.O. Jammu
28.	Shri D.P. Chaudhary	Manager, B.O. Burra Bazar, Calcutta.

